लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-81

अभिराजदण्डकम्

॥ एककविकृतदण्डकच्छन्दसां बृहत्तमं सङ्कलनम् ॥

प्रधानसम्पादकः

आचार्यश्रीपरमेश्वरनारायणशास्त्री

कुलपतिः

त्रिवेणीकविः

मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः

समवाप्तमहामहिमराष्ट्रपतिसम्मानः

ब्रह्मर्षि-महामहोपाध्यायादिविरुदालङ्कृतः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)

नवदेहली

ABHIRĀJA DAṆḌAKAM

A New Poem Composed in Daṇḍaka Metre

Editor-in-Chief
Prof. P.N. Shastri
Vice chancellor

Recipient of the Rastrapati Sammana
Felicitated with Brahmarṣi & Mahāmahopādhyāya
Triveni Kavi
Abhiraja Dr. Rajendra Mishra
Ex-Vice Chancellor
Sampurnanand Sanskrita University, Vaaranasi
U.P. INDIA

Rashtriya Sanskrit Sansthan
(Deemed University)
New Delhi

दण्डकानुक्रमणिका

शीर्षक			पृष्ठसंख्या
देवदण्डकम्			
1. शारदादण्डकम्	...	...	1-7
2. पराम्बादण्डकम्	...	...	8-11
3. शिवदण्डकम्	...	...	12-16
4. दशावतारदण्डकम्	...	...	17-24
5. विश्वेदेवदण्डकम्	...	...	25-27
6. आञ्जनेयदण्डकम्	...	...	28-32
7. भागीरथीदण्डकम्	...	...	33-36
प्रकीर्णदण्डकम्			
8. भारतदण्डकम्	...	...	39-51
9. सुरभारतीदण्डकम्	...	...	52-71
10. दण्डकदण्डकम्	...	...	72-77
11. कलिदण्डकम्	...	...	78-83
12. कालिदासदण्डकम्	...	...	84-94
13. रामभद्रदण्डकम्	...	...	95-100
14. शृङ्गगिरिदण्डकम्	...	...	101-113
15. अभिराजदण्डकम्	...	...	114-122

भारतदण्डकम्

जयतु जयतु भारती भारतालङ्कृतिर्देवभाषात्मिका संस्कृता पूतसारस्वतज्ञानगम्भीरतोयाऽऽवनीभूषणा प्रीतिदा मुक्तिदा शक्तिदा भक्तिदा सर्वदात्री सुधासीकरासारसन्दोहधौताखिलस्वान्तिकाऽवन्ति-केवोदयिन्यम्बिकेवोद्गता शाम्भवी वेदविद्याटवी तप्तजाम्बूनद-ज्योतिषेवाञ्चिता सञ्चितप्रौढवैदुष्यसञ्चारिणी तारिणी दम्भमात्सर्य-मोहादिधिक्कारिणी दृप्तवैधेयहृद्वेश्मविद्योतिनी सौख्यमन्दाकिनी मौढ्यसन्तापिनी देववृन्दादृता सर्वलोकार्चिता वेदवेदाङ्गिनी प्रीतिभागीरथी रीतिकादम्बिनी गीतिसल्लम्बिनी रम्यशाकुन्तला व्यञ्जनाकुन्तला माघमेघाञ्चिता बाणरेखाङ्किता संल्लसन्नैषधा

भारतराष्ट्र की अलंकारस्वरूपा उस भाषा की जय हो, जो देवभाषात्मिका एवं संस्कृता है, जो पवित्र सारस्वत-ज्ञानरूपी गम्भीर जल वाली है, जो भूतल की भूषणभूता है, प्रीति का संचार करने वाली, मुक्तिदात्री-शक्तिदात्री-भक्तिदात्री एवं सर्वदात्री है, जो भूषणभूता है, प्रीति का संचार से समस्त अन्तश्चेतना को प्रक्षालित करने वाली, वत्सराज उदयन से अलंकृत अवन्तिका की भाँति सब को अभ्युदय प्रदान करने वाली है, जो अम्बिका के समान उद्गत (शक्तिमयी) है, जो वेदविद्या-रूपी शिव के जटा-जूट सरीखी है, पिघले हुए सुवर्ण की ज्योति से जो मानो देदीप्यमान है, चिरकाल से संचित प्रौढ वैदुष्य का संचार करने वाली है,जो उद्धार करने वाली है,जो दम्भ (दुरभिमान) मात्सर्य, मोह, आदि (दोषों) को धिक्कृत करने वाली है, घमण्डी मूर्खों के हृदय-गह्वर को प्रकाशित करने वाली है, जो सौख्य की मन्दाकिनी जैसी है, मूढता को सन्तप्त करने वाली है, जो देव-समुदाय द्वारा समादृत है, समस्त लोक द्वारा समर्थित है, जो वेदों एवं वेदाङ्गों से युक्त है, काव्यानन्द से ओतप्रोत है, धीर-गम्भीर षड्दर्शनों वाली है, दिव्यकोटिक सम्यक् तत्त्वमीमांसा से

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)

नवदेहली